RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय संस्कृति : संज्ञा अने स्वरुप

भरत जी. वांझा

आसी. प्रोफेसर, श्री एम. जे. गोरिया महाविद्यालय, जाम–खंभाळिया

"जे धर्म सदाचारी जीवन उपर भार मूके छे, जे धर्मनो पायो जीवननी पवित्रता छे अने अे जेनुं शिखर जीवमात्र प्रत्येनो प्रेम छे ते धर्म जगतनां सर्व बंधनोमांथी मुक्ति अपावी शके छे."

मानवीना उदयकाळथी संस्कृतिनो आरंभ थयो होवानुं मनाय छे. विश्वना दरेक देश–प्रदेश अने जातिने पोतानी आगवी संस्कृति छे. परिणामे विश्वमां अेक नहीं पण अनेक रंग रसयुक्त संस्कृतिओ अस्तित्व धरावे छे, परंतु विश्वनी आ सर्व संस्कृतिओमां जूनामां जूनी संस्कृति कई ? आ प्रश्ननो जवाब आपवो आजे अधरो थई पडयो छे. त्यारे अेक वातनुं आपणे चोक्कस आश्वासन लई शकीअे के "भारतीय संस्कृति" अे विश्वनी जूनामां जूनी संस्कृतिओमांनी अेक छे. अे नक्कर वास्तविकता विश्वअे स्वीकारवी ज रही.

साचो धर्म हृदयनी कविता छे. धर्म अेटले सिद्धांतो, मतवादो के बौद्धिक वाद्यविवाद नहीं, परंतु धर्म अेटले अनुभूति. धर्म अने संस्कृति बन्ने अलग नथी, परंतु धर्म अे संस्कृतिनो ज अेक अंश छे. संस्कृतिने टकावी राखवामां धर्म पण महत्त्वनो भाग भजवे छे.

क्षणे क्षणे परिवर्तन पामता जतां आ विश्वमां हरीफाईनी हरणफाळ भरतो मानव दिवसे दिवसे लागणीहीन संवेदनाविहीन बनतो जाय छे. आधुनिक ग्लोबलाईझेशन अने कोम्प्युटर युगमां विश्व ज्यारे दिन – प्रतिदिन नानुं बनतुं जाय छे अने अेकवीसमी सदीमां प्रगतिनां पगथियां चडतो जतो मानव आजे अेकलतानो अहेसास करवा लाग्यो छे त्यारे तेने बळ, प्रेरणा तथा प्रोत्साहन आपनार जो कोई परिबळ होय तो तेनो धर्म अने संस्कृति छे, जे माणसने खरा अर्थमां मानव बनावी राखे छे. दरेक मानव पोताना धर्म संस्कृतिने टकाववानो – प्रसराववानो प्रयत्न करतो रहे छे. कारण के धर्म जीवनथी अलग नथी. जीवन अे ज धर्म छे. धर्म विनानुं जीवन मनुष्य जीवन नथी, परंतु पशुजीवन समान छे. धर्म विशे गौतम बुद्ध कहे छे के,

देशनां धर्म, साहित्य, मानवमूल्यो अने आदर्शोना संचयनुं नाम संस्कृति. आथी ज कहेवायुं छे के कोईपण देशनी संस्कृति विशे जाणवुं होय तो सौ प्रथम अे देशनुं साहित्य वांचवुं. कारण के आ साहित्यनुं सर्जन करनार साहित्यकार आखरे तो कोई संस्कृति साथे जोडायेलो होय छे. आथी जाण्ये–अजाण्ये पण अे साहित्यने पोताना जातीय संस्कारोथी रंगी दे छे. साहित्यमां जे ते देशनी संस्कृतिनुं प्रतिबिंब अवश्य पडवानुं. आम साहित्य अने संस्कृति बन्ने परस्पर जोडायेली बाबत छे. कोईपण देश–प्रदेश के जातिनी संस्कृति जेटली उच्च अेटलुं ज अेनुं साहित्य पण उच्चकोटिनुं होवानुं. भारतवर्षना रामायण अने महाभारत जेवा वैश्विक स्तरे स्थान पामेलां महाकाव्यो परथी भारतीय संस्कृतिनी गरिमानो ख्याल आवे छे.

विश्वयुद्धोमां मोटापाये थयेली मानव खुवारीथी समग्र दुनियाना विद्वानोने मानवजातना अस्तित्वनी अनिश्चितताना प्रश्नो मुंझववा लाग्या. आ प्रश्नोनो साहित्यमां पण पडघो पडयो. जेना परिणाम स्वरुपे अस्तित्ववाद, अतिवास्तववाद, असंगतिवाद, प्रतीकवाद, कल्पनवाद, आधुनिकतावाद जेवी अनेक विचारधाराओ – संज्ञाओ अस्तित्वमां आवी अने तेना विशे विचारणा शरु थई. भारतीय साहित्यमां अने गुजराती साहित्यमां पण आ संज्ञाओना संदर्भमां विवेचनात्मक विचारणा शरु थई. सांप्रत समयमां भारतीय साहित्य अने गुजराती साहित्यमां नारीचेतना, दलितचेतना, देशीवाद, भारतीयता जेवी नवी संज्ञाओ – विचारधाराओ अस्तित्वमां आवी रही छे. भारतीय संस्कृतिनी आबोहवामां श्वास लेनारा आपणे भारतीयता विशे बहु अल्प ज्ञान धरावीअे छीअे. पाश्चात्य साहित्यनी संज्ञाओना प्रमाणमां भारतीयता जेवी संज्ञाओ विशे भारतीय साहित्य अने गुजराती साहित्यमां खूब ज अल्प प्रमाणमां चर्चा करवामां आवी छे. गुजराती विवेचनात्मक साहित्यना संदर्भमां भारतीयता जेवी संज्ञा विशे डॉ. नरेश वेद जेवा संनिष्ठ अभ्यासीना थोडा लेखो अने अन्य बे चार लेखो सिवाय आ संज्ञाने स्पष्ट करे अे प्रकारना अभ्यास लेखो प्राप्त थता नथी. आ संज्ञा विशे ऊंडाणथी अने गंभीरताथी विचारीअे छीअे त्यारे तेना आंतर बाह्य स्वरुपनी संकुलतानो ख्याल आवे छे. आ संज्ञा आधुनिकतानी संज्ञा जेटली ज संकुल अने विस्तृत छे. वळी तेना मूळिया पण अेटला ऊंडा ऊतरी गया छे के तेनो ताग लेवा जईअे त्यारे अनेक प्रश्नोनो सामनो करवो पडे छे. सौ प्रथम तो जेने आपणे "भारतीयता" कहीअे छीअे अे शुं छे ? भारत देशने भारतीयता साथे केटलो अने केवो संबंध रह्यो छे ? भारतीय नागरिक अने भारतीयता अेकबीजाना आधार – आधेय छे ? भारतीयता अने राष्ट्रीयता वच्चे कोई अंतर खरुं ? भारतीयता शुं कोई धर्म के संप्रदाय छे ? भारतीयता शुं कोई विचारधारा छे के दृष्टिकोण छे ? भारतीयता, आधुनिकता अने पश्चिमीकरण अेकबीजानी विरोधी संज्ञाओ छे ? भारतीयता शुं कोई जीवनरीति के विचारसरणीनी द्योतक संज्ञा छे ? भारतीयताने शुं सांप्रत भारतना भौगोलिक सीमाना संदर्भमां ज

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

समजावी शकाय ? भारतीयता भावनात्मक ख्याल छे के भौगोलिक ख्याल छे ? भारतीयतानो भारतीय संस्कृति, सभ्यता, ईतिहास, भाषा – परंपरा अने धर्म साथे केटला अंशे सांकळी शकाय ? भारतीयतानी ओळख माटे अेवां कोई लक्षणो के वलणो चींधी शकाय ? सामाजिक, सांस्कृतिक, आ□यात्मिक, तात्त्विक, राजकीय, भौगोलिक, कलाकीय, साहित्यिक आदि परिप्रेक्ष्यमां भारतीयताने तपासीअे छीअे त्यारे तेनुं केवुं बृहद् स्वरुप ऊपसी रहे छे ? आ प्रकारना अनेक प्रश्नोने भारतीयतानुं स्वरुप स्पष्ट करतां अहीं तपासवा जरुरी लागे छे. परंतु आ बधा प्रश्नोना उत्तरो आपवा सरळ नथी, कारण के भारतीयता अे बहुपरिमाणी, बहुअर्थी अने विवादास्पद सम्प्रत्यय छे.

भारतीयतानो ख्याल विशाळ होवाथी तथा व्यापक फलक पर विस्तरेलो होवाथी तेना विशे सामान्य लोकोमां ज नहीं परंतु विद्वानोमां पण भिन्न भिन्न मतमतांतरो प्रवर्तता रह्या छे.

भारतमां विभिन्न भाषाना विद्वान साहित्यकारो, चिंतको, विवेचको, धार्मिक अने राजकीय नेताओअे भारतीयताने संज्ञाबद्ध करवाना प्रयत्नो कर्या छे. जेमां केटलाक प्रयत्नो आवकारदायक छे तो केटलाक प्रयत्नो खरा अर्थमां भारतीयतानी संज्ञाने योग्य दिशामां व्याख्यायित करता सराहनीय प्रयत्नो छे. अलबत्त आ प्रयत्नोमां तेमने राजकीय, सामाजिक के धार्मिक परिबळोनी मर्यादा नडी छे. छतां पण अनेक अडचणो, मुश्केलीओ अने मर्यादाओथी शकय अेटला पर रहीने योग्य दिशामां केटलुंक चोक्कस अने नक्कर कही शकाय अेवुं काम विद्वानोअे कर्युं छे.

विविध विद्वानोना वारंवारना प्रयत्नो छतां चोक्कस निश्चित माळखामां भारतीयतानी व्याख्याने गोठवी शकाती नथी. कारण के भारतीयता अे बहुअर्थी, बहु परिमाणी संज्ञा छे. आम छतां अही आपणे आ संज्ञानी साथे संकळायेल विभिन्न अर्थो, अ□यासो अने परिमाणोने तपासीने आ संज्ञाने स्पष्ट करवाना प्रयास करीअे.

भारतीय संस्कृतिना भारतीय साहित्य, भारतीय दर्शनो, भारतीय धर्मभावना, भारतीय शिक्षण, भारतीय संगीत, भारतीय नृत्य, भारतीय कळाओ, भारतीय राज्यतंत्र, आ□यात्मिकता, चिंतन, मानवेतर सृष्टि साथे प्रेम संबंध ईत्यादि धटकोना अभ्यास द्वारा भारतीयताने समजी शकाय.

भारत जेवा विशाळ देशमां अनेकतामां अेकता रहेली छे. भारत बिनसांप्रदायिक देश छे. तेथी अनेक धर्म पाळता लोको अहीं छे. जेमां हिन्दु, मुस्लिम, खिस्ती, पारसी, शीख, जैन, बौद्ध जेवा अनेक धर्मना अनुयायीओ जोवा मळे छे. अेक हिन्दु धर्ममां पण स्वामिनारायण संप्रदाय, कबीरपंथी, बीजमार्गी, नाथपंथी, वैष्णवमार्गी, पुष्टिमार्गी, उमापंथी, दासपंथी, गेबीपंथी, शैवपंथी, भागवत संप्रदाय, शाकत संप्रदाय, पाशुपल संप्रदाय, बारमती संप्रदाय, प्रणामी संप्रदाय, सौर संप्रदाय, वल्लभ संप्रदाय, पीराणापंथी अेवा अनेक संप्रदाय तथा तेमां पण पेटा विभाग जोवा मळे छे.

अढारे वर्णना लोको अहीं छे. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शुद्र अेवा चार वर्णमां पण अनेक ज्ञाति अने पेटाज्ञातिओ जोवा मळे छे. अनेक प्रांतो अने प्रदेशोमां तथा जुदी जुदी भाषाओमां वहेंचायेला अने जुदी जुदी रहेणीकरणी, पोषाक अने नोखानोखा रीतरिवाज प्रमाणे जीवता देवदेवीओनी पूजा थती होय छे. विविध वर्ण प्रमाणे कर्ममां वहेंचायेलो आ देश छे.

आटली बधी विविधताओ होवा छतां अेकताना तांतणे बंधायेली भारतीय प्रजा अने तेनी बिनसांप्रदायिकता अे भारतीयताने समजवानी चावी छे.

भारतीय प्रजानो प्रकृतिप्रेम, मानवेतर सृष्टि साथेनो प्रेमसंबंध, ज्ञान, संयम, भक्ति, कर्मफलत्याग, गुरु – शिष्य संबंध, चार आश्रम, चार पुरुषार्थ, अहिंसा, बलोपासना, मूर्तिपूजा, प्रतीको, मृत्युविचार, अवतार, कल्पना, अद्वैतनुं अधिष्ठान ईत्यादि द्वारा पण भारतीयताने पामी शकाय.

"भारत" संज्ञानो अर्थ अने भारतीयता साथेनो तेनो संबंध जाण्या पछी "भारतीय कोण" आ विशे विचारीअे छीअे त्यारे तेनी अर्थसंकुलताने लीधे "भारतीय" अेटले शुं ? आ प्रश्ननो जवाब आपवो अधरो लागे छे. खूब व्यापक फलक पर विस्तरेला आ शब्दना अर्थने विविध विद्वानोअे पोतानी बुद्धिमता प्रमाणे व्याख्याबद्ध करवाना प्रयत्नो कर्यो छे.

"भारतीयता" भारतीय प्रजा माटे अेक जीवन पद्धति छे, अेक दृष्टिकोण छे. भारतीय संस्कृति अने जीवन पद्धतिने भारतीयता साथे सीधो संबंध छे. तेवी भारतीय व्यक्तिने ओळखवा माटे आपणे कही शकीअे के भारतीय संस्कृतिनां सोळ संस्कारोमां माननारी–पालन करनारी, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अे चार पुरुषार्थो तथा आनंद, सौन्दर्य अने नीतिनुं आचरण करनारी, ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम अने संन्यासाश्रम अे चारेय आश्रम प्रमाणे जीवन जीवनारी, माता, पिता, गुरुने देवतृल्य गणी तेना प्रत्ये पूज्यभाव धरावनारी, मातृभूमिनुं गौरव अने तेनी रक्षाकाजे आत्मबलिदान आपवा तत्पर होय अेवी व्यक्तिने भारतीय कही शकाय.

आम भारतीय धर्म अने संस्कृति तथा संस्कारिताने उजागर करनार कोईपण माणस पछी ते जन्मे भारतीय होय के नहोय पण कर्मे भारतीय साबित थाय, तेना लोहीमां तथा अणुअे अणुमां देशप्रेम अने भारतीयता सभरे भरेली होय ते व्यक्ति खरा अर्थमां भारतीय छे.

भारतीयतानो प्रगाढ सम्बन्ध भारतीय संस्कृति साथे रह्यो छे. तेथी आ संज्ञानो सांस्कृतिक सन्दर्भ तपासतां संस्कृति अेटले शुं ? भारतीय संस्कृतिनां परिचायक अेवां लक्षणो – वलणो कयां कयां छे ? संस्कृति अने भारतीय संस्कृति विशे विभिन्न विद्वानोअे केवां केवां मंतव्यो व्यक्त कर्यां छे ? आ प्रश्नोनी विस्तृत छणावट भारतीयतानी विभावनाने सुस्पष्ट करवामां सहायरुप थई शके तेम छे. तेथी अहीं आपणे

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

ભારતીયતાના સાંસ્કૃતિક સંદર્ભને તપાસતા આ બધા મુદ્દાઓની સાધાર ચર્ચા કરીશું.

સંસ્કૃતિ : સંજ્ઞા અને સ્વરુપ :

"ભારતીયતા" ભારતીય સંસ્કૃતિ સાથે પ્રગાઢપણે જોડાયેલા વિભાવ છે. ભારતીય સંસ્કૃતિને પૂરેપૂરી સમજવા માટે સૌ પ્રથમ આપણે "સંસ્કૃતિ" : સંજ્ઞા અને સ્વરુપને સમજવું આવશ્યક છે. વિભિન્ન ભારતીય અને પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોએ સંસ્કૃતિ વિશે પોતાનાં મંતવ્યો રજૂ કર્યાં છે.

"સમાજના સભ્ય તરીકે જે સંકુલ વિશિષ્ટતાનું એકમ સર્જે છે એનું નામ સંસ્કૃતિ. જેમાં આખું સામાજિક જ્ઞાન, માન્યતાઓ, કલા, નૈતિક ભાવનાઓ, કાયદો, રુઢિ, વિશિષ્ટ શક્તિઓ અને દેવભાવનાનો સમાવેશ થાય છે." – ટેઈલર

"આપણાં વલણો, માન્યતાઓ, ચિંતન, નિર્ણયો અને મૂલ્યાંકનો, આપણી સંસ્થાઓ – રાજકીય, ધાર્મિક, આર્થિક તથા કાયદા વિષયક : આપણા નૈતિક તથા વ્યવહારનાં ધોરણો, આપણાં પુસ્તકો, યંત્રો, વિજ્ઞાન શાળાઓ અને દાર્શનિકો : આ બધા જ અને બીજાં પણ તત્ત્વો અને વ્યક્તિઓ નિરાળા, તેમજ વિવિધ સંબંધોમાં સંસ્કૃતિને રચે છે." – ગોલ્ડન વાઈઝર

"કોઈપણ માનવ સમૂહના આચારો અને વિચારોના સરવાળા કરતાં કંઈ ઓછું નહીં તેમ વધુ નહીં તે સંસ્કૃતિ" – વિઝલર

"સંસ્કૃતિ એટલે માનવીનું સકલકાર્ય – All that is artificial જેમાં યંત્રો અને ઓજારો તેમજ જીવનનાં સર્વ વલણો આવી જાય, જે માનવીએ વિકસાવ્યા હોય અને પેઢી દર પેઢી વારસામાં ઉતરી આવ્યા હોય." – ફોલસમ

"માનવીના પાર્થિવ અને આ□યાત્મિક જીવનના પરંપરાગત ઉતરી આવેલાં તત્ત્વો એટલે સંસ્કૃતિ" – સેપીર

"આપણા આદર્શો, પ્રવૃત્તિઓ અને પ્રાર્થિવ સિદ્ધિઓનો સરવાળો એનું નામ સંસ્કૃતિ." – વોલીસ

આદિકાળમાં માનવીની જીવન વિધિથી સંસ્કૃતિનો ઉદ્ભવ થયો. તે પછી જેમ – જેમ માનવનો વિકાસ થતો ગયો, માન્યતાઓ, આસ્થાઓ, પ્રયાસો અને પરંપરાઓ સ્થાપિત થવા લાગી. આ બધા પણ સંસ્કૃતિના આધારભૂત અંગ બની ગયા. સંસ્કૃતિ માનવીની જીવનવિધિઓને એ સમાજ – સ્વીકૃત આદર્શોથી પરિચય કરાવી નિયંત્રિત કરવા લાગી. સામાજિક વ્યવસ્થા સ્થાપિત કરવા માટે સંસ્કૃતિ માનવીને સમાજના એક વિશેષ ઢાંચામાં ઢાળી દે છે. સંસ્કૃતિ માનવીના સ્વભાવ અને આચરણને નિર્ધારિત નિયમોના આધાર પર એક વિશિષ્ટ દિશામાં વિકસિત કરે છે. સંસ્કૃતિના વિષયમાં એ પણ સત્ય છે કે તે કોઈ માનવીના પ્રયાસોનું ફળ નથી. તે કોઈ એક કાળનું પ્રતીકૂળ પણ નથી. સંસ્કૃતિ તો એક અવિરત ધારા છે. જેમાં યુગ યુગની માન્યતાઓ સામેલ હોય તેનો તે વિકાસ કરતી રહે છે. જીવનસંબંધી પ્રત્યેક વિષયોનો સમાવેશ સંસ્કૃતિ અંતર્ગત આવે છે. એ દૃષ્ટિએ સંસ્કૃતિનો એક નિશ્ચિત વિસ્તાર બતાવી શકવાનું કપરું છે. આમ છતાં કહી શકાય કે સંસ્કૃતિનું ક્ષેત્ર સમાજ હોય છે. તેનો વિસ્તાર વિશદ, વિસ્તૃત અને સામાજિક હોય છે. સંસ્કૃતિનો સીધો સંબંધ એક દેશ, જાતિ યા કોઈ વિશિષ્ટ સમાજ અથવા જન સમુદાયમાં પ્રચલિત ધાર્મિક આસ્થાઓ, પ્રવૃત્તિઓ, વિચાર–ધારાઓ, રુચિઓ, વ્યવહારો, સ્વભાવ, રીત–રિવાજ અને રહેવાની ઢબ સાથે હોય છે. સંસ્કૃતિના વર્તુળમાં ત્યાની દાર્શનિક, ધાર્મિક, સામાજિક, સાહિત્યિક અને કલાત્મક માન્યતાઓનાં તત્ત્વો આવી જાય છે. ભારતીય પરંપરા મુજબ સંસ્કૃતિના પાંચ અવયવ છે. ધર્મ, દર્શન, ઈતિહાસ, વર્ણ તથા સંસ્કાર આ તત્ત્વો ખાસ કરીને ધાર્મિક અનુષ્ઠાનો યા ઉત્સવોના અવસર વખતે પ્રગટ થાય છે.

આ રીતે સંસ્કૃતિ માનવીના સુસંસ્કૃત સંસ્કારો, આદર્શ વિચારો અને કમનીય કળાઓની અભિવ્યક્તિ છે. તે માનવજીવનના એ બધાં તત્ત્વોના સમૂહનું નામ છે જે ધર્મ અને દર્શનથી શરુ થઈ કલા–કૌશલ, સમાજ તથા વ્યવહાર વગેરેમાં પૂર્ણ થાય છે. આ તત્ત્વોની સમગ્રતાને જ સંસ્કૃતિની સંજ્ઞા આપી શકાય. સંસ્કૃતિ અંતર્ગત માનવીના વ્યક્તિગત જીવનથી માંડી, સમાજમાં તેના સમસ્ત કાર્ય–કલાપો અને આચરણની ગતિવિધિઓ આપી જાય છે. સંસ્કૃતિનું એક અંગ "જીવન–દર્શન" હોય છે. તેના અંતર્ગત એ સંસ્કૃતિમાં માનવીય આદર્શો, સદ્ગુણો, માન્યતાઓ અને રાષ્ટ્રીય મૂલ્યોનું પ્રસ્થાપન કરી શકાય છે.

ભારતીય સંસ્કૃતિ

સંસ્કૃતિ વિશેના વિભિન્ન વિદ્વોનાનાં મંતવ્યો પરથી "સંસ્કૃતિ" ની સંજ્ઞા અને સ્વરુપ વિશે સ્પષ્ટ થઈ શકાય છે. સંસ્કૃતિનાં ઉદ્ભાવક અને પોષક પરિબળો છે દેશની ભૌગોલિક, સામાજિક, પ્રાકૃતિક પરિસ્થિતિ. અર્થાત્ પ્રત્યેક દેશની સંસ્કૃતિ આગવી અને અલાયદી હોય છે. પ્રત્યેક દેશની સંસ્કૃતિનાં લક્ષણો જુદાં જુદાં હોય છે. એ દૃષ્ટિએ જોઈએ તો ભારતમાં આર્યોના આગમનથી આર્ય સંસ્કૃતિનો પ્રારંભ થયો. આપણી પ્રાચીન આર્ય સંસ્કૃતિ ભારતીય સંસ્કૃતિ તરીકે પ્રચલિત થઈ છે.

જ્ઞાનોપાસના – જ્ઞાન વિશેનો ખ્યાલ :

ભારતીય સંસ્કૃતિ એક મહાન અને વિશેષ ઘટના છે. અભેદમાં ભેદ અને ભેદમાં અભેદ એ ભારતીય સંસ્કૃતિનું સ્વરુપ છે.

"ભારતીય સંસ્કૃતિમાં અંધશ્રદ્ધાને સ્થાન નથી. બધે જ વિચારોના મહિમાનું જ્ઞાન કરવામાં આવ્યું છે. વેદને ભારતીય સંસ્કૃતિનો પાયો ગણવામાં આવે છે. પરંતુ વેદ એટલે શું ? વેદ શબ્દનો અર્થ જ્ઞાન એવો થાય છે. જ્ઞાન ભારતીય સંસ્કૃતિનો આધાર છે, જ્ઞાન પર ઊભી થયેલી આ ભવ્ય સંસ્કૃતિ છે." ભારતીય સંસ્કૃતિ ગગન જેવી વિશાળ અને સાગર જેવી અતાગ છે.

"કાળ અનંત છે અને જ્ઞાન અનંત છે. નવું નવું જ્ઞાન ઉદય પામશે અને ભારતીય સંસ્કૃતિ એ જ્ઞાનનો સત્કાર કરવા સૌ પહેલી ઊભી રહેશે. ભારતીય સંસ્કૃતિને જ્ઞાનથી વધુ પવિત્ર બીજું કંઈ જ લાગતું નથી.

ધર્મ અને કર્મનો મહિમા :

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

"भारतीय संस्कृति दरेक डगलुं बुद्धिपूर्वक मांडवानुं कहे छे.

विचार करीने वर्तो, जोईने डग मांडो, गाळीने पाणी पीओ."

भारतीय संस्कृति क्षितिज पर देखाता भव्य, दिव्य, नव्य विचारोने ग्रहण करशे. भारतीय संस्कृति स्थाणुनी स्थाणु संस्कृति नथी. ते गतिशील छे, आगळ वधनारी छे, ते कदी अटकशे नहीं.

भारतीय संस्कृति समाजने महत्त्वनो गणे छे. व्यक्ति समाज माटे छे. व्यक्ति अेटले माया अने समाज अेटले सत्य छे. आपणे समाज माटे छीअे, मानवजाति माटे छीअे, आ सहु प्राणीमात्र माटे छीअे. पत्थर अेमने अेम पडयो होय तो अेमनुं महत्त्व नथी. पण ते जो ईमारतमां संयमपूर्वक गोठवाशे तो अे अमर थई जशे, अेने महत्त्व मळशे. आपणे आ समाजनी ईमारतमां योग्य रीते गोठवाई जवानुं छे अने त्यां शोभी रहेवानुं छे.

सामाजिक समानता :

ज्ञान बे प्रकारनुं छे. अेक आ□यात्मिक अने बीजुं विज्ञान. काम सारुं थवा माटे आ बन्ने हाथनी आवश्यकता छे. आ□यात्मिक ज्ञान अेटले ज अद्वैत, समग्र मानवजाति मारी छे. आ बधा मारा ज बांधवो छे. अने अेमनी सेवा करवा माटे मारे विज्ञान जोईअे छे, आवी जे दृष्टि छे ते ज्ञान–विज्ञानात्मक दृष्टि कहेवाय.

बधां शास्त्रोनुं मुख्य शास्त्र समाजशास्त्र छे. अेटले ज भारतीय संस्कृति अद्वैतनुं शास्त्र आगळ धरीने प्रगति करवानी वात करे छे. समाजमां सौने सुख मळे, सहु ने ज्ञान मळे, सहुने पेट भरीने खावा मळे, पहेरवा कपडा मळे, बधाना विकास माटे तक ऊभी थाय. कोई कोईने हीणुं न पाडे. सबळो दुबळाने नीचोवे नहीं, बीजाने गुलाब न बनावे, पोतानी हवेलीओ ऊभी करीने बीजाना धरनी होळी न करे. आपणे जीववा माटे बीजाने न मराय.

संयम :

संयम भारतीय संस्कृतिनो आत्मा छे. अेम कही शकाय के भारतीय संस्कृति संयम पर रचायेली छे. जीवनमां संयम जोईअे. संयम विना आपणा हाथे उत्तम कार्य थशे नहीं.

संयम तुच्छ नथी. अे विकास माटे छे, समाजना हित माटे छे. जो आपणे संयम नहीं पाळीअे तो आपणुं काम बराबर थशे नहीं. काम बराबर नहीं थवाथी समाजने नुकशान थशे. आपणे मात्र आपणा पोताना माटे नथी. आपणे समाज माटे छीअे, अेनुं भान आपणने होवुं जोईअे. आ आपणो देह, आ आपणुं जीवन समाजनुं छे. आपणुं पोषण आखी सृष्टि करी रही छे. सूर्य प्रकाश आपी रह्यो छे. मेघ पाणी आपी रह्यो छे. वृक्ष फळफूल आपी रह्या छे. खेडूत अनाज आपी रह्यो छे. वणकर वस्त्र आपी रह्यो छे. आपणे आखी सजीव–निर्जीव सृष्टिनी सेवामां अर्पण करवुं अे आपणुं काम छे. आ जीवन अेमने सेवा द्वारा अर्पण करवानुं छे.

संयम अेटले शरणागति के आज्ञाकारी बनवुं अेम नहीं. संयम अेटले नबळाई नहीं, संयम अेटले सामर्थ्य. संयम जीवनना विकास माटे छे. संयम आपणा हाथे अनंत सेवा थाय अे माटे छे. संयम समाजमां वधु आनंद आवे, वधु संगीत आवे अेटला माटे छे. संयम अे सार्वभौम बाबत छे.

कर्मफलत्याग :

"भारतीय संस्कृति जय–पराजय, सिद्धि, असिद्धि, सफळता – निष्फळता, यश–अपयश सामे □यान आपती नथी. समुद्रनां मोजां उपर उछळे छे अने नीचे पडे छे. समुद्र उपर उछळतो अने नीचे पडतो किनाराने अडे छे. समुद्रमां भरती आवे छे, ओट आवे छे. पण तेनी धीरगंभीर गर्जना कयारेय अटकती नथी. अेनुं कर्म चाल्या करे छे, जीवन के मरण, संपत्ति के विपत्ति, दास्य के स्वातंत्र्य, जय के पराजय अे बधा तरफ □यान न आपता सतत □येय तरफ गति करवानी. चारित्र्य अे वात मुख्य छे. मारो पोतानो विकास अे मुख्य बाबत छे. हु अेना माटे छुं जय–पराजयना मोजा साथे लडतो हुं आगळ वधीश. जीतथी धेलो नहीं थाउं. हुं मारुं कर्म हाथमां लईने आगळ वधतो रहीश. भारतीय संस्कृति केवळ विजयनुं तत्त्वज्ञान करती नथी. जो ते केवळ विजयना तत्त्वज्ञान पर ऊभी होय तो ते दुनियाना मात्र अडधा ज अनुभवो पर ऊभी छे. अेम गणाशे. तुं हंमेशा सुखना स्वर्गमां रहीश अेवी लालच भारतीय संस्कृति आपती नथी. विजयनो छाक राखीश नहीं. पराजयथी हताश अने दुःखी थईश नहीं. भारतीय संस्कृतिनो आ महान संदेश छे. जय–पराजयना ख्यालो तोडता, भेदता आपणे आगळ वधवानुं छे. विजयना अने पराजयना साक्षी बनवानुं. ईसुने क्रोस पर लटकवानो समय थयो छतां ते महापुरुषे कह्युं, "प्रभु, जेवी तारी ईच्छा ! " कर्म करता फांसी मळे के सिंहासन मळे, फूलहार मळे के यातना मळे, यश मळे के अपयश मळे मारो आत्मा मलिन थशे नहीं. आ साचा कर्मवीरनी श्रद्धा छे. अेने अदृष्टि फळ देखातुं होय छे. अंते सत्यनो विजय थवानो छे अे वात अेने स्पष्ट देखाती होय छे. पण विजयना नगारा वगाडीश नहीं अने पराजयनां रोदणां रोईश नहीं. बन्ने पर सवार थईने, निश्चित बनीने, सदैव कर्म करतो रहे अेमां तन्मय थई जा. अे ज तारो मोक्ष, अे ज पूजा, अे ज साचो अने महान धर्म, आ बधुं भारतीय संस्कृति कही रही छे."

गुरु–शिष्य संबंध :

भारतीय संस्कृतिमां गुरुभक्ति अे अेक अत्यंत मधुरकाव्य छे. गुरु अेटले केवळ शिक्षक नहीं, केवळ आचार्य नहीं. शिक्षक आपणने ज्ञानना आंगणामां लावे छे पण गुरु आपणने ज्ञानना गर्भागारमां लई जाय छे. जे ते □येयभूत ज्ञान साथे गुरु आपणने अेकरुप करी दे छे. ज्ञान साथे तन्मय थयेला गुरु शिष्यने पण समाधिमां पहोंचाडे छे. गुरु अेटले उछळतो

ज्ञानसागर ! गीतामां ज्ञानार्जनना प्रकारो कह्यां छे अे ज्ञान तुं प्रणाम करीने, वारंवार प्रश्न पूछीने, सेवा करीने प्राप्त करी ले. गुरु पासेथी ज्ञान मेळववा माटे प्रणाम अने सेवा अे बे ज मार्गो होय छे. नम्रता अे ज्ञाननो खरो प्रारंभ छे. गुरु पासे शिष्य खाली मन लईने जाय छे. कुवामां पारावार पाणी छे. पण जो वासण नीचुं नहीं नमे तो तेमां अे अनंत पाणीमांथी अेक टीपुं पण आवशे नहीं. अे ज प्रमाणे ज्ञानना जे सागर होय छे तेमनी पासेथी ज्यां सुधी आपणे नमीशुं नहीं, अेमना पग पासे चूपचाप बेसीशुं नहीं त्यां सुधी आपणने ज्ञान मळशे नहीं. भरवा माटे वळवुं पडे, वधारवा माटे नमवुं पडे.

चार पुरुषार्थ :

भारतीय संस्कृतिमां धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष अे चार पुरुषार्थ प्राप्त करवानी वात पर भार मूकायो छे. भारतीय संस्कृति अेक ज वात पर भार मूकती नथी. ते व्यापक छे, अेकांगी नथी. भारतीय संस्कृति दीनता–निराशाना गाणा गानारी संस्कृति नथी. भारतीय संस्कृति पैसाने वमनवत गणती नथी. अर्थ अे पुरुषार्थनी वात छे. हृदय, संपत्ति त्याज्य नथी. प्रयत्नपूर्वक द्रव्य भेगुं करो. संपत्ति मेळवो. भारतीय संस्कृतिने संपत्तिनो छोछ नथी. भारतीय संस्कृति संपत्तिने पचावनारी संस्कृति छे. जे वात संपत्तिनी ते ज कामोपभोगनी. भारतीय संस्कृति कामने मानवतुं स्थान आपे छे. संपत्ति पवित्र छे, काम पण पवित्र छे. माणसे अर्थ अने काम प्राप्त करवा जोईअे. संपत्ति मेळववी जोईअे, अने तेनो सारी रीते उपभोग पण लेवो जोईअे. अहीं कामनो अर्थ मात्र रतिसुख अेटलो ज नथी. काम अेटले उपभोग, सुखपोभोग काम अेटले विषयसुख, पंचेन्द्रियोनुं सुख, पंच विषयोनुं सेवन–काम शब्दने आवा व्यापक अर्थमां लेवो जोईअे.

चारवर्ण :

भारतीय समाज व्यवस्थाने सुदृढ रीते चलाववा माटे समाजने चार वर्णोमां वहेंचवामा आव्यो. आ चार वर्णोमां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य अने शुद्ध अे दरेक वर्णने योग्यता मुजबनां काम सोपवामां आव्यां. आम कामनी वहेंचणी माटे आ वर्णव्यवस्था अमलमां आवी हती, परंतु समय जतां आ वर्ण व्यवस्थाअे रुढिचुस्त ज्ञातिओनुं स्वरुप धारण करी लीधुं. ब्राह्मणो सौथी ऊंचो वर्ण गणाता. तेओअे विद्याभ्यास अने धार्मिक विधि–विधानो तथा कर्मकांडो करवानी जवाबदारी सोंपाई, क्षत्रियोअे राज्य चलाववुं तथा दुश्मनो सामे युद्ध करी प्रजानुं रक्षण करवुं अे काम सोंपायुं. वैश्य वेपार करे अने क्षुद्रो अे उपरना त्रणे वर्गोनी सेवाचाकरी करे अेवुं काम वहेचायुं. परिणामे ऊंच नीचना भेदभाव अमलमां आव्या. अस्पृश्यता जेवुं कलंक समाजमां व्यापी गयुं. धर्मना नामे वाडाओ शरु थया. ऊंच नीचना भेदभावना लीधे हिंदु गणाती शुद्ध जाति मंदिरमां प्रवेशी न शकती. पूजा, पाठ न करी शकती. आम वर्णव्यवस्था द्वारा समाजमां भागला पडया. आ व्यवस्थाना लीधे आजे पण भारतीय समाज अनेक ज्ञातिओमां छुटो छुटो वहेंचायेलो छे. आम वर्ण व्यवस्थाथी फायदा ओछा थया ने नुकशान वधु थयुं. छतां चार वर्णोअे भारतीय संस्कृति अेक विशिष्ट लाक्षणिकता छे.

जीवन अे कुदरतनी महामूली मूडी – अमूल्य भेट गणाय छे. आ जीवनरुपी बागने सुगंधी बनाववा माटे माणसे धर्म अने संस्कृति रुपी फूलो खीलव्यां. दुनियाना कोई पण छेडे वसता मानवना पोताना अंगत ख्यालो, भावो, मूल्यो होय ज छे. आ मूल्यो अे संस्कृति छे. विश्वनी अन्य प्रजाओनी जेम भारतीय प्रजाने पण अजोड कही शकाय अेवो भव्य सांस्कृतिक वारसो मळेलो छे. जेना प्रत्ये दरेक भारतीयताने आदर छे. भारत अने भारतीयता अे आपणुं गौरव छे. भारतीय संस्कृति हृदय अने बुद्धिनी पूजा करनारी संस्कृति छे. उदार भावना अने निर्मळ ज्ञानना संयोगथी जीवनमां सुंदरता लावनारी संस्कृति छे. ज्ञान विज्ञानने सहदयता साथे जोडीने संसारमां मधुरता प्रसरावनारी आ संस्कृति छे. भारतीय संस्कृति अेटले कर्म–ज्ञान–भकितनो जीवंत महिमा. आवां जीवनमूल्यो अने भाव – भावनोओ द्वारा आपणी भारतीयता धडायेली छे.

आपणी आ□यात्मिकता अने परंपरागतता, निरंतरता अने अखंडता, रहस्यमयता अने आनंदमयता, विशाळता अने उदारता, चिरंतनता अने प्राचीनता, सक्षमता अने समानता, तितिक्षा अने सहनशीलता, बिनसांप्रदायिकता अने विश्वबंधुत्व : सत्यम् – शिवम् – सुन्दरम्नी भावना : चार वर्णो, चार आश्रम अने चार पुरुषार्थ, दया, करुणा, ममता, प्रेम, त्याग, बलिदान, वैराग्य, दान, शूरवीरता जेवा उच्च आदर्शो, जन्म, पुनर्जन्म, नसीब, कर्मफळ, पाप – पूण्य, नीति–अनीति, ईश्वर, देशकाळ, तप–त्याग, दान–बलिदान, संयम, शील–सदाचार, कुळ–गोत्र, वंश–कुटुंब, ज्ञाति–धर्म जेवा अनेक विशिष्ट ख्यालो अने ऋणभार मुकित, धर्मे जय पापे क्षय, सुख–दुःख अेक सिक्कानी बे बाजु, अशरणने शरण, आतिथ्य भावना, माता पिता गुरु प्रत्ये आदर भाव, स्वामी निष्ठा, वतनप्रेम, पशु प्रेम, प्रकृति प्रेम, व्यक्तिथी समाष्टि तरफ प्रस्थान जेवां जीवन मूल्यो द्वारा आपणी भारतीयता धडायेली छे. उपरोकत विशिष्ट लक्षणो ज्यां कयांय पण जोवा मळे त्यां भारतीयता अवश्य होवानी ज.

संदर्भ :

१. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनी विकासरेखा : धीरुभाई ठककर, पोप्युलर बुक स्टोर, सुरत, आवृत्ति, १६६७

२. ई.स. १६२१ थी १६४० सुधीनी गुजराती अने हिन्दी : अैतिहयमूलक नवलकथाओनो तुलनात्मक अभ्यास भाग–१–२, डॉ. कृष्णकांत कडकिया, कुमकुम प्रकाशन, प्रथम आवृत्ति, १६७८.

३. कार्यवाही सने.१६४८–४६ : रा.ना., शुकल; गुजरात विद्यासभा, प्रथम आवृत्ति, १६प३.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

प. कार्यवाही सने.१६४८–४६ : रा.ना., शुकल; गुजरात विद्यासभा, प्रथम आवृत्ति, १६प०.
६. कार्यवाही सने. १६पप : विजयराय वैद्य; गुजरात विद्यासभा, प्रथम आवृत्ति, १६प६.
७. कार्यवाही सने. १६प६ : उपेन्द्र छ. पंडया; गुजरात विद्यासभा, प्रथम आवृत्ति, १६६०.
८. कार्यवाही सने. १६प८ : डॉ. मधुसूदन पारेख; गुजरात विद्यासभा, प्रथम आवृत्ति, १६प६३.
६. कार्यवाही सने. १६६१ : डॉ. हसित बूच; गुजरात विद्यासभा, प्रथम आवृत्ति, १६६३.
१०. गुजरातीनुं विषयवस्तु : प्रि. चौहाण, प्रा. नायक अने प्रा. ठककर, अनडा बुक डीपो, अमदावाद आ. वर्ष १६७०
११. गुजराती विषय वस्तु : प्रि. आकुवाला, सी. के.; भारत प्रकाशन, अमदावाद आ. वर्ष १६६८.
१२. गुजराती विषय वस्तुनुं अध्ययन : डॉ. पटेल, पाठक, दवे अने डाभी, बी. अेस. शाह प्रकाशन, अमदावाद, त्रीजी आवृत्ति, १६६७.
१३. गुजराती नवलकथामां राष्ट्रीय अस्मिता : डॉ. सी. अेच. गांधी; अभिनव प्रकाशन, प्रथम आवृत्ति, १६७३.
१४. "ग्रंथस्थ वाङ्मय" (१६३७, ३५, अने ४७नी वार्षिक ग्रंथ समीक्षाओ) अनंतराय रावळ; आर. आर. शेठनी कंपनी, अमदावाद.